# राजनीतिक निष्ठा और समर्पण भाव का स्वार्थप्रेरित होना ठीक नहीं

आमतौर पर हम प्रत्यक्ष रूप से अपने को प्रभावित कर देने वाले मुद्दे पर ही ध्यान देते हैं। हमारी प्राथमिकता में हमारा अपना परिवार होता है। जिसके व्यवस्थित पालन पोषण के निमित्त हम अपने-अपने क्षेत्र में अर्थोपार्जन की मशक्कत में तल्लीन रहते हैं। कभी-कभी परिचितों के बीच मौसम या राजनीति पर भी बात कर लिया करते हैं। हर एक मौसम में चल रहे मौसम की चर्चा स्वाभाविक रूप से की जाती है। लेकिन राजनीति का जहां तक सवाल है, तो हम जाने-अनजाने राजनीति के प्रति अपनी उथली सोच का प्रदर्शन कर बैठते हैं। या तो हम इधर का पक्ष लेते हैं या उधर का। हमारे पास तर्क नहीं केवल मान्यता होती है।

हम राजनीतिक विषयों पर चल रहे घटनाक्रम के संदर्भ में पूर्ण रूप से निष्पक्ष तथा तटस्थ दृष्टिकोण का प्रतिपादन नहीं कर पाते। निश्चित ही हमारा राजनीतिक पूर्वाग्रह हमें सोचने के लिए इतना समय नहीं देता कि हम अपने अभिमत को तर्क सहित प्रस्तुत कर सके। दरअसल शहरों के काँफी हाउस से लेकर गांव की चौपाल तक चलने वाली राजनीतिक चर्चा में अधिकांश चर्चाकार का अभिमत पूर्वाग्रह युक्त ही रहा करता है। यानी कि जिस किसी राजनीतिक विषय के प्रति हमने जो धारणा बना रखी है, हम उसी का प्रतिपादन करते हैं। यह नही सोचते कि हमारी धारणा तर्कसम्मत है भी या नहीं ?

एक प्रकार से हम राजनीति पर आंख मूंदकर दो टूक टिप्पणी कर बैठते हैं। लेकिन अपने कथन का औचित्य सिद्ध करने के लिए हम सुनी-सुनाई बातों का ही हवाला दे दिया करते हैं। वैसे यह माना जा सकता है कि किसी भी लोकतांत्रिक देश में जब अधिकांश आबादी दाल रोटी की मशक्कत में ही रमा करती हो, तो ऐसे में राजनीतिक दृष्टिकोण पर दाल-रोटी की मशक्कत भारी पड़ जाती है। यही कारण है कि लोकतंत्र में लोकतंत्र के चीर हरण पर भी गंभीर आपत्ति तक नहीं ली जाती। राजनीति का तो यह आलम है कि इधर वाले इधर का राग अलापते हैं और उधर वाले उधर का राग अलापते है।

उक्त संदर्भ में यह गौरतलब है कि ऐतिहासिक राजनीतिक पृष्ठभूमि से आच्छादित राजनीतिक संगठन के तथाकथित सर्वमान्य नेतृत्व के बेतुके बोलवचन पर भी परंपरागत रूप से उनके शुभचिंतक वर्ग द्वारा स्वविवेक से आपत्ति तक नहीं ली जाती।

जाहिर है कि यह वर्ग खानदान विशेष के प्रति अपनी खानदानी निष्ठा के चलते बेतुके बोलो का भी मूक समर्थक बन दिखाई देता है। एक तरफ देश-प्रदेश में आम नागरिकों की राजनीतिक चेतना का नजारा दिखाई देता है, लेकिन परंपरागत रूप से दल विशेष के प्रति आसक्ति भाव का परिचय भी स्पष्ट तौर पर देखने को मिल रहा है।

आज भी उक्त दल का मत-प्रतिशत लगभग स्थिर अवस्था में ही दिखाई देता है। आवश्यक होने पर देश प्रदेश में नेतृत्व परिवर्तन का निर्णय तटस्थ मतदाता ही लेते आए हैं। एक प्रकार से कहा जा सकता है कि देश के मतदाता अलग-अलग वर्ग में विभाजित है। एक वर्ग दल विशेष का और एक वर्ग अन्य दल विशेष का अंध समर्थक ही अधिक नजर आता है। वैसे देश-प्रदेश में एकाधिक बार राजनीतिक नेतृत्व परिवर्तन हुआ है। हर एक परिवर्तन के पीछे तटस्थ मतदाताओं का ही सर्वाधिक योगदान रहा है। लेकिन आज भी कुछ इधर के ही हैं और कुछ उधर के ही हैं। इनकी निष्ठा अंध निष्ठा की हद तक दिखाई देती है।

ऐसा वर्ग आमतौर पर मतदान के समय अपने विवेक का इस्तेमाल नहीं करता। इन हालातो के मद्देनजर यह समय की मांग है कि लोकतंत्र में लोकतंत्र की अस्मिता को सुरक्षित रखने के लिए तटस्थ मतदाताओं की संख्या में विस्तार के प्रयास गंभीरता पूर्वक होने चाहिए। सचमुच यह घोर आश्चर्यजनक तथ्य है कि दल विशेष के परंपरागत खानदानी समर्थक दल के मुखिया की नादानी को भी बुद्धिमानी समझने की गंभीर भूल कर रहे हैं। ऐसी धारणा के नजारे खुलेआम देखे जाते हैं कि हमारे दल के नेता ने यदि यह कहा है तो सही कहा है और वह कहा है तो वह भी सही कहा है।

देश के लोकतंत्र को तटस्थ या ढुलमुल मतदाताओं के भरोसे ही नहीं छोड़ा जा सकता। बेहतर हो यदि हर एक चुनाव में तमाम नागरिक अपने दल व प्रतिनिधि का चयन तर्कसम्मत आधार पर करें। वैसे 5 या 7% के लगभग मतदाताओं के रुझान के आधार पर ही देश-प्रदेश की सरकारें बनती बिगड़ती रही, तो ऐसे में हम ऐसा कैसे कह सकते हैं कि देश में संपूर्ण लोकतंत्र की स्थिति स्थापित हो चुकी है। ऊपरी तौर पर चाहे लोकतंत्र की परिपक्वता परिलक्षित होती रही हो, लेकिन यदि उसकी जड़ें कम गहराई तक पैठे हुए होगी , तो लोकतंत्र का वृक्ष आखिर कितना टिक पाएगा ?

▶ राजेंद्र बज

# 'काँकरोच' नहीं, परिवर्तन का प्रस्थान-बिंदु हैं भारत के युवा

**समाज तब सबसे अधिक खतरनाक हो जाता है, जब वह अपनी ही पीढ़ी को अपमानजनक उपमाओं में देखने लगे। किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके युवाओं की आँखों में चमकता है; यदि वही युवा व्यवस्था से निराश होकर व्यंग्य, कटाक्ष और प्रतिरोध की भाषा बोलने लगें, तो यह केवल युवाओं का संकट नहीं होता, बल्कि उस सामाजिक-राजनीतिक संरचना का दर्पण होता है जिसने अपेक्षाओं और अवसरों के बीच गहरी खाई बना दी है। किंतु इस पूरी परिस्थिति को केवल 'काँकरोच संस्कृति' कह देना न तो वैज्ञानिक दृष्टि से उचित है, न समाजशास्त्रीय दृष्टि से और न ही नैतिक दृष्टि से। यह सत्य है कि सोशल मीडिया पर उभरी 'काँकरोच जनता पार्टी' जैसी अभिव्यक्तियाँ व्यवस्था के प्रति आक्रोश की प्रतीक हैं, परंतु उन्हें केवल परजीवी मानसिकता, निकम्मेपन या नैतिक पतन का प्रतीक मान लेना वास्तविकता का अत्यधिक सरलीकरण है।**

इतिहास साक्षी है कि हर युग में युवाओं की भाषा पुरानी पीढ़ी को असभ्य, उद्दंड और विद्रोही प्रतीत हुई है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय भी युवा क्रांतिकारियों को अराजक, अव्यावहारिक और उग्र कहा गया था। तकनीकी क्रांति के समय कंप्यूटर और इंटरनेट में डूबे युवाओं को 'भटका हुआ' बताया गया था। किंतु वही पीढ़ियाँ आगे चलकर समाज की दिशा बदलती हैं। आज का युवा भी उसी संक्रमण काल से गुजर रहा है, जहाँ उसकी अभिव्यक्ति पारंपरिक शिष्टाचार से अधिक डिजिटल प्रतीकों और मीम-संस्कृति में प्रकट होती है। यह भाषा भले परिपक्व न लगे, पर उसके पीछे छिपा असंतोष वास्तविक है। इसलिए समस्या का समाधान युवाओं का उपहास नहीं, बल्कि उनके भीतर के संदेश को समझना है।

यह कहना कि आज का युवा केवल मुफ्तखोरी, त्वरित प्रसिद्धि और शॉर्टकट चाहता है, आधा सत्य है। वास्तविकता यह है कि भारत का युवा आज अभूतपूर्व प्रतिस्पर्धा, आर्थिक असुरक्षा और मानसिक दबाव से गुजर रहा है। करोड़ों विद्यार्थी वर्षों तक परीक्षाओं की तैयारी करते हैं, लेकिन भर्ती प्रक्रियाएँ वर्षों तक लंबित रहती हैं। परीक्षा-पत्र लीक होना, नियुक्तियों में देरी, संविदा आधारित रोजगार और बढ़ती महँगाई ने असुरक्षा को गहरा किया है। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार बेरोजगारी केवल आर्थिक समस्या नहीं होती; यह व्यक्ति के आत्मविश्वास, सामाजिक पहचान और मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। ऐसे में यदि युवा व्यंग्यात्मक भाषा में व्यवस्था पर चोट कर रहा है, तो वह केवल हास्य नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक प्रतिरोध भी है।

अक्सर यह आरोप लगाया जाता है कि सोशल मीडिया ने युवाओं को 'काँकरोच' बना दिया है। परंतु यही सोशल मीडिया लोकतंत्रीकरण का सबसे बड़ा माध्यम भी बना है। पहले सत्ता और मीडिया के बीच जो दूरी थी, उसमें सामान्य नागरिक की आवाज दब जाती थी। आज एक साधारण छात्र, किसान या बेरोजगार युवा भी अपनी बात लाखों लोगों तक पहुँचा सकता है। यह सही है कि सोशल मीडिया पर सतहीपन, ट्रोल संस्कृति और फेक न्यूज का खतरा है, किंतु यह भी उतना ही सत्य है कि अनेक सामाजिक आंदोलनों, आपदा राहत अभियानों, शिक्षा अभियानों और वैज्ञानिक जागरूकता अभियानों को इसी माध्यम ने शक्ति दी है। जिस मंच पर भ्रम फैलता है, उसी मंच पर ज्ञान भी फैलता है। दोष मंच का नहीं, उसके उपयोग का होता है।

'काँकरोच' शब्द को यदि वैज्ञानिक दृष्टि से देखें, तो वह जीव पृथ्वी के सबसे अधिक अनुकूलनशील जीवों में गिना जाता है। वह विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रहने की क्षमता रखता है। विडंबना यह है कि जिस शब्द को अपमान के रूप में प्रयुक्त किया गया, वही अनजाने में आज के संघर्षशील युवाओं का प्रतीक भी बन जाता है-ऐसे युवा जो कठिन आर्थिक परिस्थितियों, अस्थिर रोजगार और सामाजिक दबावों के बीच भी टिके हुए हैं, सीख रहे हैं, संघर्ष कर रहे हैं और अवसर खोज रहे हैं। भारत के स्टार्टअप, वैज्ञानिक अनुसंधान, डिजिटल नवाचार और वैश्विक कंपनियों में नेतृत्व कर रही नई पीढ़ी इस बात का प्रमाण है कि युवाओं को केवल निराशा के चश्मे से नहीं देखा जा सकता।

यह कहना भी उचित नहीं कि आज का युवा केवल 'मुफ्त सुविधाओं' की राजनीति से प्रभावित है। लोकतंत्र में कल्याणकारी योजनाएँ केवल दान नहीं होतीं; वे सामाजिक न्याय का उपकरण भी होती हैं। यदि कोई गरीब छात्र छात्रवृत्ति से पढ़ पाता है, कोई किसान सब्सिडी से खेती बचा पाता है या कोई बेरोजगार युवा प्रशिक्षण योजना से रोजगार पा लेता है, तो इसे मुफ्तखोरी कहना सामाजिक असमानता की वास्तविकता से आँख मूँदना होगा। विकसित राष्ट्रों में भी शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा पर व्यापक सरकारी निवेश होता है। प्रश्न यह नहीं कि सहायता दी जाए या नहीं; प्रश्न यह है कि सहायता आत्मनिर्भरता बढ़ाने वाली हो।

आलेख में राजनीतिक वर्ग को 'पॉलिटिकल क्लास' कहकर जनता से कटे हुए अभिजात वर्ग के रूप में चित्रित किया गया। इस आलोचना में कुछ सच्चाई अवश्य है, क्योंकि लोकतंत्र में जनप्रतिनिधियों और जनता के बीच दूरी बढ़ना चिंता का विषय है। किंतु इसका समाधान युवाओं को तिरस्कृत करना नहीं, बल्कि उन्हें राजनीतिक भागीदारी के लिए प्रेरित करना है। यदि युवा राजनीति से विमुख होंगे, तो व्यवस्था और अधिक बंद कमरों में सिमट जाएगी। लोकतंत्र तभी मजबूत होता है जब नई पीढ़ी प्रश्न पूछती है, बहस करती है और सक्रिय भागीदारी करती है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हर पीढ़ी अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में अधिक जटिल चुनौतियों का सामना करती है। आज का युवा केवल नौकरी नहीं खोज रहा; वह पहचान, स्थिरता और मानसिक संतुलन भी खोज रहा है। जलवायु परिवर्तन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑटोमेशन, वैश्विक आर्थिक मंदी और सामाजिक ध्रुवीकरण जैसी समस्याएँ उसके सामने हैं। ऐसे में यदि उसकी भाषा में बेचैनी है, तो वह परिस्थितियों की उपज है। उसे 'निकम्मा' कह देना समस्या का समाधान नहीं, बल्कि संवाद का अंत है।

भारत की युवा शक्ति को केवल सोशल मीडिया मीम्स से नहीं आँका जा सकता। यही युवा अंतरिक्ष अनुसंधान में योगदान दे रहे हैं, यही स्टार्टअप संस्कृति को आगे बढ़ा रहे हैं, यही ग्रामीण क्षेत्रों में नवाचार कर रहे हैं, यही आपदाओं में स्वयंसेवक बनकर सहायता पहुँचा रहे हैं। कोविड काल में लाखों युवाओं ने भोजन वितरण, रक्तदान, ऑनलाइन शिक्षा और चिकित्सा सहायता जैसे कार्यों में भाग लिया। यदि कुछ युवाओं में दिशाहीनता है, तो उसका कारण केवल व्यक्तिगत नैतिक पतन नहीं, बल्कि शिक्षा, रोजगार और सामाजिक संरचना की विफलताएँ भी हैं।

समस्या यह नहीं कि युवा प्रश्न पूछ रहे हैं; समस्या तब होती है जब समाज प्रश्नों को अपमान समझने लगता है। किसी भी लोकतंत्र की ताकत उसकी असहमति को सहन करने की क्षमता में होती है। यदि युवा व्यवस्था पर व्यंग्य कर रहे हैं, तो उन्हें शत्रु की तरह नहीं, चेतावनी संकेत की तरह देखा जाना चाहिए। क्योंकि इतिहास बताता है कि जब भी युवा पीढ़ी की बेचैनी को दबाया गया, समाज में विस्फोटक परिस्थितियाँ पैदा हुईं; और जब उसी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा मिली, तब राष्ट्रों ने नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कीं।

आज आवश्यकता युवाओं को 'काँकरोच' कहने की नहीं, बल्कि उनके भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानने की है। उन्हें उपहास नहीं, अवसर चाहिए; भाषण नहीं, भरोसा चाहिए; तिरस्कार नहीं, सहभागिता चाहिए। भारत विश्व की सबसे युवा आबादी वाले देशों में है। यदि यह ऊर्जा निराशा में बदल गई, तो यह राष्ट्रीय संकट होगा; लेकिन यदि इसे शिक्षा, विज्ञान, नवाचार और नैतिक नेतृत्व से जोड़ा गया, तो यही ऊर्जा भारत की सबसे बड़ी शक्ति सिद्ध होगी।

इसलिए सही प्रश्न यह नहीं कि 'युवा इतने काँकरोच क्यों हैं ', बल्कि यह है कि क्या हमारी व्यवस्था, शिक्षा और राजनीति युवाओं को वह सम्मान, अवसर और दिशा दे पा रही है जिसके वे अधिकारी हैं। क्योंकि किसी राष्ट्र का भविष्य उसके युवाओं के अपमान से नहीं, उनके सशक्तिकरण से निर्मित होता है।

▶ डॉ रामानुज पाठक
सतना (म प्र)

# वीआईटी भोपाल का प्लेसमेंट में शानदार प्रदर्शन, 2026 बैच को मिला 70 लाख रुपये तक का पैकेज

सीहोर, वीआईटी भोपाल यूनिवर्सिटी ने 2026 बैच के प्लेसमेंट सीजन में मजबूत प्रदर्शन दर्ज किया है, जिससे एक फ्यूचर-रेडी संस्थान के रूप में उसकी स्थिति और मजबूत हुई है। साथ ही, देश और विदेश की प्रमुख कंपनियों के बीच विश्वविद्यालय के प्रति बढ़ते भरोसे और लगातार बढ़ती भागीदारी को भी बल मिला है। मजबूत होते प्लेसमेंट रिकॉर्ड को आगे बढ़ाते हुए, इस वर्ष विश्वविद्यालय का सबसे बड़ा अंडरग्रेजुएट पैकेज 70 लाख रुपये वार्षिक रहा, जबकि पोस्टग्रेजुएट छात्रों के लिए सबसे बड़ा पैकेज 56 लाख रुपये वार्षिक दर्ज किया गया। लगातार बेहतर प्रदर्शन की अपनी परंपरा को कायम रखते हुए, वीआईटी भोपाल ने 2023 से 2026 तक लगातार चार वर्षों तक 50 लाख रुपये से अधिक के पैकेज हासिल किए हैं।

अब तक 2026 बैच के 1,550 से अधिक छात्रों का प्लेसमेंट हो चुका है, जबकि प्लेसमेंट के लिए रजिस्टर छात्रों में 80 प्रतिशत से अधिक को अवसर प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा, 630 से अधिक छात्रों को ड्रीम और सुपर ड्रीम ऑफर्स मिले हैं, जिनमें इंटर्नशिप और फुल-टाइम अवसर दोनों शामिल हैं।

इस वर्ष प्लेसमेंट प्रक्रिया में टेक्नोलॉजी, कंसल्टिंग, सेमीकंडक्टर, फाइनेंस, एनालिटिक्स, हेल्थकेयर, रिसर्च और कोर इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों की कई बड़ी कंपनियों ने भाग लिया। इनमें Google, Apple, Microsoft, Amazon, Cisco, Intel, MediaTek, Dell, SAP Labs, Philips, PwC, EY, Honeywell, Airbus, BMW, Volvo, HSBC, PayPal, IBM, Flipkart, Zomato, Juniper Networks, Couchbase, Baker Hughes और कई अन्य प्रमुख कंपनियां शामिल हैं।

वीआईटी भोपाल ने अंतरराष्ट्रीय प्लेसमेंट में भी अपनी मजबूत उपस्थिति बनाए रखी है। विश्वविद्यालय को 2023 से 2026 तक लगातार चार वर्षों से अंतरराष्ट्रीय प्लेसमेंट प्राप्त हुए हैं। जापान की कंपनियों जैसे PATIC TRUST Co., Ltd., OHKUMA IND. CO., LTD., ISHIMITSU INDUSTRY Co., Ltd. Human Resocia ने भी छात्रों को अवसर प्रदान किए हैं। 2026 बैच की उपलब्धियों के साथ-साथ विश्वविद्यालय को 2027 बैच के लिए भी शुरुआती चरण में मजबूत प्लेसमेंट गति मिल रही है। Intel, AMD, MediaTek, Dell, Thomson Reuters, SAP, Synopsys, Novartis, DBS Tech India और Stryker जैसी कंपनियां शुरुआती चरण से ही कैंपस भर्ती प्रक्रिया से जुड़ी हैं।

ए एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में, वीआईटी भोपाल के विद्यार्थियों ने वर्ष 2021 से 2027 तक लगातार सात बैचों में माइक्रोसॉफ्ट (Microsoft) में इंटर्नशिप तथा पूर्णकालिक अवसर प्राप्त किए हैं। यह विश्वविद्यालय के मजबूत प्रशिक्षण ढांचे और इंडस्ट्री भरोसे को दर्शाता है।विश्वविद्यालय के एक प्रवक्ता ने कहा, 'इस वर्ष के प्लेसमेंट परिणाम हमारे मजबूत शैक्षणिक माहौल, इंडस्ट्री-ओरिएंटेड प्रशिक्षण और लगातार सिकल डेवलपमेंट प्रयासों को दर्शाते हैं। वीआईटी भोपाल में हमारा फोकस हमेशा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, प्रैक्टिकल लर्निंग, रिसर्च एक्सपोजर और इंडस्ट्री से जुड़ाव पर रहा है। लगातार मिल रहे सकारात्मक परिणाम इस बात का प्रमाण हैं कि बड़ी कंपनियां हमारे छात्रों और विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रणाली पर भरोसा जता रही हैं।

# मिनेता हेमंत पांडे ने उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी से शिष्टाचार भेंट की

***देहरादून। मूल रूप से उत्तराखंड के पिथौरागढ़ निवासी एवं प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेता हेमंत पांडे ने शनिवार को मुख्यमंत्री आवास में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान दोनों के बीच उत्तराखंड की कला, संस्कृति, फिल्म उद्योग तथा विभिन्न समसामयिक विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई।***

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि उत्तराखंड प्राकृतिक सौंदर्य, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्रतिभाशाली कलाकारों की भूमि है। राज्य सरकार प्रदेश में फिल्म निर्माण को बढ़ावा देने तथा कला एवं संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड को फिल्म शूटिंग के लिए एक प्रमुख डेस्टिनेशन बनाने हेतु सरकार द्वारा कई सकारात्मक कदम उठाए जा रहे हैं। वहीं अभिनेता हेमंत पांडे ने प्रदेश सरकार द्वारा फिल्म शूटिंग, स्थानीय कलाकारों और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड की लोक संस्कृति, प्राकृतिक सुंदरता और यहां की प्रतिभाएं देश-दुनिया में अपनी अलग पहचान रखती हैं।

# साहित्य कुंभ एवं पुस्तक मेला-2026 में आचार्य डॉ. महेंद्र सिंह गोले होंगे सम्मानित

काशीपुर। साहित्य, भाषा एवं संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए वरिष्ठ साहित्यकार एवं लेखक आचार्य डॉ. महेंद्र सिंह गोले को आगामी 30 मई 2026 को आयोजित होने वाले 'साहित्य कुंभ एवं पुस्तक मेला-2026' में सम्मानित किया जाएगा।

'साहित्य आराधना मंच, काशीपुर' द्वारा आयोजित इस भव्य साहित्यिक आयोजन में नगर एवं आसपास के क्षेत्रों के लगभग 40 साहित्यकारों को विभिन्न साहित्यिक सम्मानों से अलंकृत किया जाएगा। कार्यक्रम का आयोजन 30 मई, शनिवार को सायं 6 बजे से शगुन गार्डन, काशीपुर में किया जाएगा।

मुख्य संयोजक डॉ. रजनीश कुमार शर्मा ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य स्थानीय साहित्यकारों को सम्मानित करना, नवोदित रचनाकारों को प्रोत्साहित करना तथा साहित्य प्रेमियों और लेखकों के बीच संवाद स्थापित करना है। कार्यक्रम में पुस्तक प्रदर्शनी, साहित्यकार सम्मान समारोह, काव्य पाठ, साहित्यिक गोष्ठी एवं युवा लेखकों के लिए प्रेरक सत्र भी आयोजित किए जाएंगे। आचार्य डॉ. महेंद्र सिंह गोले की चर्चित कृति 'हजार सपनों वाला जीवन' पाठकों के बीच सराही जा रही है। उनकी आगामी पुस्तक 'ज्योतिष और वास्तु - एक अनकहा सत्य' तथा निर्माणाधीन कृति 'शिखर से शून्य की ओर' भी चर्चा का विषय बनी हुई हैं।

उल्लेखनीय है कि काशीपुर में पहली बार इतने व्यापक स्तर पर 'साहित्य कुंभ एवं पुस्तक मेला' आयोजित किया जा रहा है, जिसमें साहित्यकारों, कवियों, लेखकों, पत्रकारों एवं साहित्य प्रेमियों की बड़ी संख्या में सहभागिता की उम्मीद है। आयोजकों ने नगरवासियों से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर इस साहित्यिक महोत्सव को सफल बनाने की अपील की है।

# वृक्षारोपण, कवि सम्मेलन सह सम्मान समारोह का आयोजन

पाई संस्थान मुजफ्फरपुर बिहार में एम एस केशरी पब्लिकेशन द्वारा 5 जून को होने जा रहा है भव्य कवि सम्मेलन, जिसमें मुजफ्फरपुर के नामचीन कविगण शामिल हो रहे हैं। इस भव्य कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती संध्या देवी, लोकप्रिय विधायक व विशिष्ट अतिथि के रूप में इंजी विशाल कुमार व मुस्कान केशरी, जी मंच पर मौजूद रहेंगे।

मंच संचालन व सरस्वती वंदना मुस्कान केशरी व सुजाता शर्मा जी द्वारा किया जाएगा। इस कवि सम्मेलन के आमंत्रित स्वर पियूष कुमार आशु, विवेक कुमार, विवेक वशिष्ठ, प्रतीष कुमार, सुजाता शर्मा, शिल्पा श्रीवास्तव, सदैव सौरभ, तुषार कुमार व अन्य कविगण रहेंगे। सभी आमंत्रित स्वरों को सम्मान पत्र, अंगवस्त्र व पत्रिका देकर सम्मानित किया जाएगा। एम एस केशरी पब्लिकेशन की संस्थापिका मुस्कान केशरी जी सभी साहित्यकार का तहे दिल से स्वागत करती है।

पब्लिकेशन द्वारा एकल व साझा संकलन पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं और हर माह दो दिवसीय काव्यगोष्ठी, जुगलबंदी, साक्षात्कार और कविता व विडियो प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। जिसमें देशभर के साहित्यकार सम्मिलित होते हैं और कार्यक्रम कों सफल बनाते हैं। इसी क्रम में मुजफ्फरपुर बिहार में मुजफ्फरपुर साहित्यिक महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देशभर के साहित्यकार सम्मिलित होगा।भाग लेने हेतु सम्पर्क करें 6203124315